चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	1-5-23	3	7-8

नवाचार अपनाएं युवा किसान : प्रो. कांबोज

हिसार। एचएयू के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के सभागार में प्रधानमंत्री के मन की बात कार्यक्रम 100वें एपिसोड को सुना गया।

कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने कहा कि युवा किसान कृषि की नवीनतम तकनीकों व नवाचारों के बल पर कृषि क्षेत्र में नए-नए आयाम स्थापित कर सकते हैं। इस अवसर पर कुलसचिव डॉ. बलवान सिंह, ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, मौलिक विज्ञान एवं डॉ. नीरज कुमार, डॉ. एसके पाहुजा, डॉ. मंजू मेहता रहे। ब्यूरो

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	1-5-23	3	3-6

नवीनतम तकनीक व नवाचार अपनाकर युवा किसान बन सकते हैं दूसरों के लिए प्रेरणा : प्रो. काम्बोज

हिसार (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के सभागार में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मन की बात के 100वें एपिसोड को सुनने के लिए शिक्षक, विद्यार्थी एवं कर्मचारीगण एकत्रित हुए और साथ ही प्रेरणा भी ली।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि कृषि के क्षेत्र में युवा किसान नए स्टार्टअप के तौर पर उभर सकते हैं। जरूरत है तो उन्हें सिर्फ सही दिशा देने व सुविधाएं मुहैया कराने की। जिसकी बदौलत ये युवा किसान कृषि की नवीनतम तकनीकों व नवाचारों के बल पर कृषि क्षेत्र में नए-नए आयाम स्थापित कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि ये युवा किसान जैसे ही प्रतिष्ठित स्टार्टअप के तौर पर उभरेंगे तो उन्हें देख दूसरे युवा भी कृषि सहित अन्य क्षेत्रों में कड़ी मेहनत कर देश की उन्नति व समृद्धि में अहम भागीदार बनेंगे। तभी हमारे देश का युवा आत्मनिर्भर बनेगा।

मन की बात कार्यक्रम सुनते अधिष्ठाता व मौजूद शिक्षक, विद्यार्थी एवम अधिकारीगण।

इस अवसर पर कुलसचिव डॉ. बलवान सिंह मंडल, ओ.एस.डी. डॉ. अतुल ढींगड़ा, मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा, मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय की निदेशक डॉ. मंजू मेहता सहित अन्य अधिकारीगण शिक्षक व कर्मचारी मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	2-5-23	3	1-3

कार्यक्रम

एचएयू के कृषि महाविद्यालय के कमेटी रुम में मनाई गई डॉ. रामधन सिंह की जयंती

डॉ. रामधन का खाद्यान्न उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान

संवाद न्यूज एजेंसी

हिसार। कृषि वैज्ञानिक डॉ. रामधन सिंह ने गेहूं, चावल, जौ और दलहन की 25 उन्नत किस्मों का विकास कर कृषि क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन किया था। खासकर हरियाणा व पंजाब में हरित क्रांति के दौरान खाद्यान्न उत्पादन व उत्पादकता में प्रमुख उपलब्धियां इसी महान वैज्ञानिक की देन है।

ये बातें एचएयू के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने कृषि महाविद्यालय के कमेटी रूम में आयोजित स्व. डॉ. रामधन सिंह की जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि कहीं।

कार्यक्रम डॉ. रामधन सिंह चेयर आनुवंशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग द्वारा आयोजित किया गया था। कुलपति ने कहा कि डॉ. रामधन सिंह ने 1933-34 में गेहूं की किस्मों सी-518 और सी-591 को विकसित किया था।

बासमती चावल की किस्म 370 व देसी गेहूं की किस्म सी-306 आज भी प्रसिद्ध हैं। डॉ. रामधन सिंह ने अपने जीवन में गेहूं, चावल, जौ तथा दलहन की 25 उन्नत किस्मों को विकसित किया था। वैज्ञानिकों व विद्यार्थियों को इस महान वैज्ञानिक से प्रेरणा लेनी चाहिए।

एचएयू मे डॉ. रामधन सिंह जयंती पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते कुलपति कांबोज। संवाद

कुलपति ने कहा विश्व के मुकाबले भारत के पास केवल 2 प्रतिशत भूमि है जबकि जनसंख्या का हिस्सा करीब 18 प्रतिशत है। ऐसे में जैविक व अजैविक दबावों के चलते इतनी अधिक जनसंख्या को खाद्यान्न सुरक्षा देना बहुत बड़ी चुनौती है। कार्यक्रम को कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा समेत कई लोगों ने संबोधित किया।

इस मौके पर मौसम विभाग के अध्यक्ष डॉ. मदन लाल खिचड़, ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा सहित वैज्ञानिक व विद्यार्थी भी मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भूमि	2-5-23	10	6-8

एचएयू के स्वर्गीय राव बहादुर डॉ. रामधन सिंह की जयंती मनाई

खाद्यान उत्पादन में योगदान के लिए किया याद

हरिभूमि न्यूज ▸▸ हिसार

हिसार। कार्यक्रम को संबोधित करते एचएयू के कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज।

सुप्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक राव बहादुर डॉ. रामधन सिंह ने गेहूं, चावल, जौ और दलहनों की उन्नत किस्मों का विकास कर भारतीय कृषि पर सकारात्मक प्रभाव डाला। खासकर हरियाणा व पंजाब राज्यों में हरित क्रांति के दौरान अनाज उत्पादन व उत्पादकता में प्रमुख उपलब्धियां इसी महान वैज्ञानिक की देन है, जिसकी बदौलत देश में खाद्यान उत्पादन में नई क्रांति देखने को मिली थी। यह बात हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज ने कृषि महाविद्यालय के कमेटी रूम में स्वर्गीय राव बहादुर डॉ. रामधन सिंह की जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कही। यह कार्यक्रम डॉ. रामधन सिंह चेयर आनुवंशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग द्वारा आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत मुख्यातिथि ने दीप प्रज्जवलित कर की। उन्होंने कहा कि स्वर्गीय कृषि वैज्ञानिक राव बहादुर डॉ. रामधन सिंह ऐसे वैज्ञानिक थे, जिनके द्वारा विकसित किस्में अविभाजित भारत में उगाई जाती थीं। डॉ रामधन सिंह ने 1933-34 के दौरान सामान्य खेती के लिए प्रसिद्ध पंजाब गेहूं किस्मों सी-518 और सी-591 को विकसित और जारी किया। उनके द्वारा तैयार की गई बासमती चावल की 370 किस्म व देशी गेहूं की किस्म सी-306 आज भी प्रसिद्ध है। उन्होंने कहा डॉ. रामधन सिंह ने अपने जीवन में गेहूं, चावल, जौ तथा दलहनों की 25 उन्नत किस्मों को विकसित किया। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने डॉ. रामधन सिंह द्वारा कृषि क्षेत्र में दिए गए अभूतपूर्व योगदान की विस्तृत जानकारी देकर सभी का स्वागत किया। मौसम विभाग के अध्यक्ष डॉ. मदन लाल खिचड़ ने धन्यवाद किया। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा सहित वैज्ञानिक व विद्यार्थी भी मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	2-5-23	5	3-6

खाद्यान उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान के लिए याद किए जाते हैं स्व. डॉ. रामधन सिंह : प्रो. काम्बोज

हिसार, 1 मई (विरेन्द्र वर्मा): सुप्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक राव बहादुर डॉ. रामधन सिंह ने गेहूं, चावल, जौ और दलहनों की उन्नत किस्मों का विकास कर भारतीय कृषि पर सकारात्मक प्रभाव डाला। खासकर हरियाणा व पंजाब राज्यों में हरित क्रांति के दौरान अनाज उत्पादन व उत्पादकता में प्रमुख उपलब्धियां इसी महान वैज्ञानिक की देन है, जिसकी बदौलत देश में खाद्यान उत्पादन में नई क्रांति देखने को मिली थी। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहे, जोकि विश्वविद्यालय में कृषि महाविद्यालय के कमेटी रूम में आयोजित स्वर्गीय राव बहादुर डॉ. रामधन सिंह की जयंती के उपलक्ष्य में बतौर मुख्यातिथि के रूप में उपस्थित रहे। यह कार्यक्रम डॉ. रामधन सिंह चेयर आनुवंशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग द्वारा आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मुख्यातिथि ने दीप प्रज्जवलित कर की। मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि स्वर्गीय कृषि वैज्ञानिक राव बहादुर डॉ. रामधन सिंह ऐसे वैज्ञानिक थे, जिनके द्वारा विकसित किस्में अविभाजित भारत में उगाई जाती थीं। डॉ रामधन सिंह ने 1933-34 के दौरान सामान्य खेती के लिए प्रसिद्ध पंजाब गेहूं किस्मों सी-518 और सी-591 को विकसित और जारी किया। ये किस्में अपने व्यापक अनुकूलन, उपज और रोग प्रतिरोधक क्षमता के लिए प्रसिद्ध थीं। उन्होंने बताया कि इस महान वैज्ञानिक ने विभिन्न फसलों की नई किस्में इजाद कर भारत ही नही अपितु दुनिया में अलग पहचान बनाई। उनके द्वारा तैयार की गई बासमती चावल की 370 किस्म व देशी गेहूं की किस्म सी-306 आज भी प्रसिद्ध है। उन्होंने कहा डॉ. रामधन सिंह ने अपने जीवन में गेहूं, चावल, जौ तथा दलहनों की 25 उन्नत किस्मों को विकसित किया। वैज्ञानिकों व विद्यार्थियों को इस महान वैज्ञानिक से प्रेरणा लेनी चाहिए। उन्हें कड़ी मेहनत व लगन के साथ कृषि की ज्वलंत समस्याओं को लेकर अनुसंधान कार्य करते हुए देश को खाद्यान्न तथा पोषण सुरक्षा प्रदान करने में योगदान देना चाहिए। उन्होंने कहा मौसम की हर परिस्थिति में जैविक और अजैविक दबावों से निपटने के लिए वैज्ञानिकों के स्तर पर फसलों की उपयुक्त किस्मों के साथ-साथ आकस्मिक कार्य-योजना तैयार करने की बहुत जरूरत है। उन्होंने कहा विश्व के मुकाबले भारत के पास केवल 2 प्रतिशत भूमि है जबकि जनसंख्या का हिस्सा करीब 18 प्रतिशत है। ऐसे में जैविक व अजैविक दबावों के चलते इतनी अधिक जनसंख्या को खाद्यान्न सुरक्षा देना बहुत बड़ी चुनौती है। कार्यक्रम के दौरान मुख्यातिथि ने स्वर्गीय कृषि वैज्ञानिक राव बहादुर डॉ. रामधन सिंह को श्रद्धांजलि भी दी। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने डॉ. रामधन सिंह द्वारा कृषि क्षेत्र में दिए गए अभूतपूर्व योगदान की विस्तृत जानकारी देकर सभी का स्वागत किया, जबकि मौसम विभाग के अध्यक्ष डॉ. मदन लाल खिचड़ ने धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा सहित वैज्ञानिक व विद्यार्थी भी मौजूद रहे।

कार्यक्रम के दौरान संबोधित करते हुए एचएयू के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक हिन्दुस्तान	2-5-23	5	7-8

'खाद्यान उत्पादन में डॉ. रामधन सिंह का रहा अभूतपूर्व योगदान'

हिसार/ रोहतक, 1 मई (निस/हप्र)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने सोमवार को स्व. राव बहादुर डॉ. रामधन सिंह की जयंती कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि सुप्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक राव बहादुर डॉ. रामधन सिंह ने गेहूं, चावल, जौ और दलहनों की उन्नत किस्मों का विकास कर भारतीय कृषि पर सकारात्मक प्रभाव डाला। खासकर हरियाणा व पंजाब राज्यों में हरित क्रांति के दौरान अनाज उत्पादन व उत्पादकता में प्रमुख उपलब्धियां इसी महान वैज्ञानिक की देन है, जिसकी बदौलत देश में खाद्यान उत्पादन में नई क्रांति देखने को मिली थी। उन्होंने कहा कि स्व कृषि वैज्ञानिक राव बहादुर डॉ. रामधन सिंह ऐसे वैज्ञानिक थे, जिनके द्वारा विकसित किस्में अविभाजित भारत में उगाई जाती थीं। उन्होंने 1933-34 के दौरान सामान्य खेती के लिए प्रसिद्ध पंजाब गेहूं किस्मों सी 518 और सी 591 को विकसित और जारी किया।

वहीं कृषि वैज्ञानिक और पौध प्रजनन के जनक दिवंगत डा.रामधन सिंह की 132वीं जयंती उनके पैतृक गांव किलोई में मनाई गई। कार्यक्रम की शुरुआत स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण से की गई। मुख्य अतिथि के तौर पर डॉ. रामधन के पौत्र कुलवंत सिंह हुड्डा शामिल रहे। इस दौरान डॉ. रणबीर दहिया ने भी अपने विचार रखे। इस मौके पर उनके जीवन पर लिखी गई पुस्तिका भी वितरित की गई।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	2.5.23	2	4

खाद्यान उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान के लिए याद किए डॉ. रामधन सिंह

हिसार | प्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक राव बहादुर डॉ. रामधन सिंह ने गेहूं, चावल, जौ और दलहनों की उन्नत किस्मों का विकास कर भारतीय कृषि पर सकारात्मक प्रभाव डाला। खासकर हरियाणा व पंजाब राज्यों में हरित क्रांति के दौरान अनाज उत्पादन व उत्पादकता में प्रमुख उपलब्धियां इसी महान वैज्ञानिक की देन है, जिसकी बदौलत देश में खाद्यान उत्पादन में नई क्रांति देखने को मिली थी। ये विचार एचएयू के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहे। वह विवि में कृषि महाविद्यालय के कमेटी रूम में आयोजित स्वर्गीय राव बहादुर डॉ. रामधन सिंह की जयंती के उपलक्ष्य में बतौर मुख्यातिथि के रूप में उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	01.05.2023		

हकृवि कृषि महाविद्यालय के कमेटी रुम में स्वर्गीय राव बहादुर डॉ. रामधन सिंह की जयंती मनाई

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार, 1 मई। सुप्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक राव बहादुर डॉ. रामधन सिंह ने गेहूं, चावल, जौ और दलहनों की उन्नत किस्मों का विकास कर भारतीय कृषि पर सकारात्मक प्रभाव डाला। खासकर हरियाणा व पंजाब राज्यों में हरित क्रांति के दौरान अनाज उत्पादन व उत्पादकता में प्रमुख उपलब्धियां इसी महान वैज्ञानिक की देन है, जिसकी बदौलत देश में खाद्यान उत्पादन में नई क्रांति देखने को मिली थी। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहे, जोकि विश्वविद्यालय में कृषि महाविद्यालय के कमेटी रुम में आयोजित स्वर्गीय राव बहादुर डॉ. रामधन सिंह की जयंती के उपलक्ष्य में बतौर मुख्यातिथि के रूप में उपस्थित रहे। यह कार्यक्रम डॉ. रामधन सिंह चेयर आनुवंशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग द्वारा आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मुख्यातिथि ने दीप प्रज्जवलित कर की। मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि स्वर्गीय कृषि वैज्ञानिक राव बहादुर डॉ. रामधन सिंह ऐसे वैज्ञानिक थे, जिनके द्वारा विकसित किस्में अविभाजित भारत में उगाई जाती थीं। डॉ रामधन सिंह ने 1933-34 के दौरान सामान्य खेती के लिए प्रसिद्ध पंजाब गेहूं किस्मों सी-518 और सी-591 को विकसित और जारी किया। ये किस्में अपने व्यापक अनुकूलन, उपज और रोग प्रतिरोधक क्षमता के लिए प्रसिद्ध थीं। उन्होंने बताया कि इस महान वैज्ञानिक ने विभिन्न फसलों की नई किस्में इजाद कर भारत ही नही अपितु दुनिया में अलग पहचान बनाई। उनके द्वारा तैयार की गई बासमती चावल की 370 किस्म व देशी गेहूं की किस्म सी-306 आज भी प्रसिद्ध है। उन्होंने कहा डॉ. रामधन सिंह ने अपने जीवन में गेहूं, चावल, जौ तथा दलहनों की 25 उन्नत किस्मों को विकसित किया। वैज्ञानिकों व विद्यार्थियों को इस महान वैज्ञानिक से प्रेरणा लेनी चाहिए। उन्हें कड़ी मेहनत व लगन के साथ कृषि की ज्वलंत समस्याओं को लेकर अनुसंधान कार्य करते हुए देश को खाद्यान्न तथा पोषण सुरक्षा प्रदान करने में योगदान देना चाहिए। उन्होंने कहा मौसम की हर परिस्थिति में जैविक और अजैविक दबावों से निपटने के लिए वैज्ञानिकों के स्तर पर फसलों की उपयुक्त किस्मों के साथ-साथ आकस्मिक कार्य-योजना तैयार करने की बहुत जरूरत है। उन्होंने कहा विश्व के मुकाबले भारत के पास केवल 2 प्रतिशत भूमि है जबकि जनसंख्या का हिस्सा करीब 18 प्रतिशत है। ऐसे में जैविक व अजैविक दबावों के चलते इतनी अधिक जनसंख्या को खाद्यान्न सुरक्षा देना बहुत बड़ी चुनौती है। कार्यक्रम के दौरान मुख्यातिथि ने स्वर्गीय कृषि वैज्ञानिक राव बहादुर डॉ. रामधन सिंह को श्रद्धांजलि भी दी। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने डॉ. रामधन सिंह द्वारा कृषि क्षेत्र में दिए गए अभूतपूर्व योगदान की विस्तृत जानकारी देकर सभी का स्वागत किया, जबकि मौसम विभाग के अध्यक्ष डॉ. मदन लाल खिचड़ ने धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा सहित वैज्ञानिक व विद्यार्थी भी मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	01.05.2023		

खाद्यान उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान के लिए याद किए जाते हैं स्वर्गीय डॉ. रामधन सिंह : प्रो. काम्बोज

पांच बजे न्यूज

हिसार। सुप्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक राव बहादुर डॉ. रामधन सिंह ने गेहूं, चावल, जौ और दलहनों की उन्नत किस्मों का विकास कर भारतीय कृषि पर सकारात्मक प्रभाव डाला। खासकर हरियाणा व पंजाब राज्यों में हरित क्रांति के दौरान अनाज उत्पादन व उत्पादकता में प्रमुख उपलब्धियां इसी महान वैज्ञानिक की देन है, जिसकी बदौलत देश में खाद्यान उत्पादन में नई क्रांति देखने को मिली थी। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहे, जोकि विश्वविद्यालय में कृषि महाविद्यालय के कमेटी रूम में आयोजित स्वर्गीय राव बहादुर डॉ. रामधन सिंह की जयंती के उपलक्ष्य में बतौर मुख्यातिथि के रूप में उपस्थित रहे। यह कार्यक्रम डॉ. रामधन सिंह चेयर आनुवंशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग द्वारा आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मुख्यातिथि ने दीप प्रज्जवलित कर की।

मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि स्वर्गीय कृषि वैज्ञानिक राव बहादुर डॉ. रामधन सिंह ऐसे वैज्ञानिक थे, जिनके द्वारा विकसित किस्में अविभाजित भारत में उगाई जाती थीं। डॉ रामधन सिंह ने 1933-34 के दौरान सामान्य खेती के लिए प्रसिद्ध पंजाब गेहूं किस्मों सी-518 और सी-591 को विकसित और जारी किया। ये किस्में अपने व्यापक अनुकूलन, उपज और रोग प्रतिरोधक क्षमता के लिए प्रसिद्ध थीं। उन्होंने बताया कि इस महान वैज्ञानिक ने विभिन्न फसलों की नई किस्में इजाद कर भारत ही नही अपितु दुनिया में अलग पहचान बनाई। उनके द्वारा तैयार की गई बासमती चावल की 370 किस्म व देशी गेहूं की किस्म सी-306 आज भी प्रसिद्ध है। उन्होंने कहा डॉ. रामधन सिंह ने अपने जीवन में गेहूं, चावल, जौ तथा दलहनों की 25 उन्नत किस्मों को विकसित किया। वैज्ञानिकों व विद्यार्थियों को इस महान वैज्ञानिक से प्रेरणा लेनी चाहिए। उन्हें कड़ी मेहनत व लगन के साथ कृषि की ज्वलंत समस्याओं को लेकर अनुसंधान कार्य करते हुए देश को खाद्यान्न तथा पोषण सुरक्षा प्रदान करने में योगदान देना चाहिए। उन्होंने कहा मौसम की हर परिस्थिति में जैविक और अजैविक दबावों से निपटने के लिए वैज्ञानिकों के स्तर पर फसलों की उपयुक्त किस्मों के साथ-साथ आकस्मिक कार्य-योजना तैयार करने की बहुत जरूरत है। उन्होंने कहा विश्व के मुकाबले भारत के पास केवल 2 प्रतिशत भूमि है जबकि जनसंख्या का हिस्सा करीब 18 प्रतिशत है। ऐसे में जैविक व अजैविक दबावों के चलते इतनी अधिक जनसंख्या को खाद्यान्न सुरक्षा देना बहुत बड़ी चुनौती है। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने डॉ. रामधन सिंह द्वारा कृषि क्षेत्र में दिए गए अभूतपूर्व योगदान की विस्तृत जानकारी देकर सभी का स्वागत किया, जबकि मौसम विभाग के अध्यक्ष डॉ. मदन लाल खिचड़ ने धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा सहित वैज्ञानिक व विद्यार्थी भी मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	2-5-23	7	7·8

स्वास्थ्य परामर्श शिविर का शुभारम्भ

हिसार, 1 मई (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कैंपस अस्पताल में एक दिवसीय निशुल्क स्वास्थ्य परामर्श कैंप लगाया गया, जिसमें मुख्यातिथि के तौर पर मौजूद विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने रिबन काटकर निशुल्क स्वास्थ्य परामर्श कैंप का शुभारंभ किया। यह परामर्श कैंप एचएयू के कैंपस अस्पताल व सपरा मल्टीस्पेशलिटी अस्पताल के द्वारा संयुक्त रूप से लगाया गया। मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि भागदौड़ की जिंदगी में व्यक्ति इतना व्यस्त हो चुका है कि वह संतुलित आहार का सेवन नहीं कर रहा है, जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति अनेक प्रकार की बीमारियों से ग्रस्त हो रहा है। इन बीमारियों में ब्लड प्रेशर, शुगर, पेट संबंधित विकार सहित अन्य रोग शामिल है। उन्होंने बताया कि कैंसर रोग भी आज के दैनिक जीवन में प्रमुख समस्या के तौर पर उभरकर आ रहा है। अगर हम इसी तरह स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही बरतेंगे तो आने वाले जीवन में हमारे और आगामी पीढ़ी के लिए कैंसर बड़ी बन जाएगी। उन्होंने बताया कि महिलाओं को संतुलित आहार का सेवन करने व व्यायाम को दैनिक जीवन में अपनाने की जरूरत है। खासकर गर्भवती महिलाओं को हरी सब्जी व सलाद का सेवन रोजाना करना चाहिए। तभी आने वाली पीढ़ी स्वस्थ्य और रोगों से मुक्त होगी। उन्होंने बताया कि 55 या इससे अधिक आयु के लोगों को समय-समय पर स्वास्थ्य जांच करवानी चाहिए ताकि वे अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत रह सकें। उन्होंने बताया कि चाहे बुजुर्ग हो या फिर युवा और या फिर महिलाएं तला, मसालेदार युक्त भोजन से परहेज रखें। कच्ची सब्जियां और सलाद का सेवन रोजाना भोजन में शामिल करना चाहिए ताकि शरीर को पानी व फाइबर सहित अन्य महत्वपूर्ण तत्वों की कमी न हो। उन्होंने कहा कि रोजाना सुबह टहलने जरूर निकलें साथ ही व्यायाम भी करना चाहिए। कैंपस अस्पताल में कार्यरत एसएमओ डॉ. प्रीति ने बताया कि इस निशुल्क परामर्श कैंप में सपरा मल्टीस्पेशलिटी अस्पताल के डॉ. दीपक नैन (कैंसर स्पेशलिस्ट), डॉ. प्रभु स्वामी (पेट संबंधित रोग विशेषज्ञ) व डॉ. ईशिका नैन (स्त्री रोग विशेषज्ञ) अपनी सेवाएं दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	2.5.22	3	7-8

स्वास्थ्य परामर्श शिविर में वीसी ने कराई जांच

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कैंपस अस्पताल में आयोजित एक दिवसीय निशुल्क स्वास्थ्य परामर्श कैंप विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने रिबन काटकर निशुल्क स्वास्थ्य परामर्श कैंप का शुभारंभ किया। परामर्श कैंप में मुख्यातिथि ने भी ब्लड प्रेशर की जांच करवाई। इस दौरान कैंपस अस्पताल से फिजिशियन डॉ. मिनाक्षी, डॉ. सुरभि व डॉ. पुष्पेंद्र भी उपस्थित रहे। ब्यूरो

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	1-5-23	2	1-4

मई के तीसरे सप्ताह में शुरू होगी परमल धान की सीधी बिजाई

किसान तैयार कर लें खेत, खेती की लागत में एक तिहाई तक कमी आती है इस विधि से

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। धान की खेती में रोपाई के बजाय इसकी सीधी बिजाई करें। इससे पानी के अलावा मजदूरी में भी बचत होगी। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) ने धान की सीधी बिजाई की तकनीक विकसित की है। परमल किस्म के धान की सीधी बिजाई मई के तीसरे सप्ताह व बासमती की बिजाई जून के दूसरे सप्ताह में होगी। लेकिन इसके लिए खेत की तैयारी मई के पहले सप्ताह में ही कर लेनी चाहिए।

एचएयू के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने बताया कि धान की सीधी बिजाई की सफलता के लिए गेहूं की कटाई उपरांत लेजर लेवल द्वारा खेत का समतलीकरण व खरपतवारों की रोकथाम बहुत ही आवश्यक है। परमल धान की कम व मध्यम अवधि वाली किस्में (एचकेआर-128, एचकेआर-47, गोबिंद, एचएसडी-1 इत्यादि) तथा बासमती धान की सभी किस्में (सीएसआर 30, पीबी-1509, तारावडी बासमती, एच बी-2, पीबी-1121, पीबी-1) सीधी बिजाई के लिए भी उपयुक्त हैं।

अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने बताया कि परमल धान की बिजाई का उचित समय 25 मई से 15 जून है। बासमती धान की बिजाई का समय जून का दूसरा व तीसरा सप्ताह है। बत्तर अवस्था (पर्याप्त नमी वाली भूमि) में की गई बिजाई के बाद पहली सिंचाई 7 से 21 दिन बाद की जा सकती है। आगामी पानी एक सप्ताह के अंतराल पर लगाएं। वहीं जिन खेतों में बिजाई के वक्त पर्याप्त नमी न हो सिंचाई बिजाई के 4-5 दिन बाद व आगामी सिंचाई एक सप्ताह के अंतराल पर करें। सूक्ष्म तत्वों विशेषकर जिंक व लौह तत्वों की कमी के लक्षण दिखने पर 0.5 प्रतिशत जिंक सल्फेट व 2.5 प्रतिशत यूरिया (जिंक के लिए) या फैरस सल्फेट (लौह तत्व के लिए) का स्प्रे कर सकते हैं। कीट व बीमारियों का नियंत्रण रोपित धान की तरह ही करते हैं।

बीज उपचार के बाद छाया में सूखा लें

अच्छी पैदावार के लिए 8 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ की जरूरत होती है। 10 किग्रा बीज हेतु 10 ग्राम बाविस्टिन और 1 ग्राम स्ट्रप्टोसाईक्लीन से उपचार के बाद बीज को छाया में सुखा लें ताकि ड्रील द्वारा बिजाई हो सके। रीजनल डायरेक्टर धान अनुसंधान केंद्र, कोल डॉ. ओपी लठवाल ने बताया कि बत्तर अवस्था में बिजाई करके सुहागा लगाकर खरपतवारनाशी (पैंडीमिथालीन 30 प्रतिशत ईसी 1.3 लीटर प्रति एकड़ 200 लीटर पानी में) का स्प्रे तुरंत करवाना चाहिए।

08

किलोग्राम बीज प्रति एकड़ की जरूरत होती है अच्छी पैदावार के लिए

सिंचाई के 3 दिन बाद खरपतवारनाशी का स्प्रे करें

सूखे खेत में सिंचाई के 3 दिन बाद खरपतवारनाशी (पैंडीमिथालीन 30 प्रतिशत ईसी 1.3 लीटर प्रति एकड़ या टोपस्टार 50 ग्राम 200 लीटर पानी) का स्प्रे करें। बिजाई के 15-25 दिन बाद खरपतवारनाशी (नोमिनी गोल्ड या तारक 100 एमएल प्रति एकड़, 120 लीटर पानी) का स्प्रे करके खरपतवारों की रोकथाम की जा सकती है। यदि हो सके तो मई में खेत में सिंचाई लगाकर खरपतवारों को उगने दें और बिजाई से पहले जुताई करके उन्हें नष्ट कर सकते है। उन्होंने बताया कि पोषक तत्व प्रबंधन रोपाई वाले धान की तरह ही कर सकते हैं।